SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. 2nd year SESSION – 19-21

SUBJECT - Understanding the Self (EPC-4)

TOPIC NAME – आदर्श शिक्षक की संकल्पना

DATE - 26.06.21

⇒ एक आदर्श शिक्षक की संकल्पना :

हमारे समाज के निर्माण में अध्यापक की अहम भूमिका होती है। क्योंकि यह समाज उन्हीं बच्चों से बनता है जिनकी प्राथमिकता शिक्षा का जिम्मा एक अध्यापक पर होता है। वे अध्यापक ही हैं जो उसे समाज में एक अच्छा नागरिक बनाने के साथ उसका सर्वांगीण विकास भी करता है। देश में मौजूद सभी सफल व्यक्तित्व के पिछे गुरू की भूमिका जरूर रही है। एक बच्चे को मार्गदर्शन देने के साथ गुरू उसके व्यक्तित्व से उसे भलीभाँति परिचित कराता है। उसके अंदर छिपे उसके समस्त गुणों को उससे अवगत कराता है।

एक आदर्श अध्यापक को नियमबद्ध और समयबद्ध होना अत्यन्त आवश्यक है। तभी वह अपने विद्यार्थियों को नियम और समय का पालन करने वाला बना पाएगा। एक शिक्षक की भाषा बेहद मधुर, कोमल और मीठी होनी चाहिए। शिक्षक की ऐसी वाणी

बोलने चाहिए जिससे बच्चे उससे प्यार करें। व्यक्ति को अपने विकास, समाज और राष्ट्र के विकास के लिए अनुशासन बहुत जरूरी है। एक अनुशासित अध्यापक अपने विद्यार्थियों का अच्छा मार्गदर्शक होता है।

एक आदर्श शिक्षक बनने के लिए एक शिक्षक में निम्न गुणों का होना आवश्यक है –

1. आदर्श व्यक्तित्व :- शिक्षकों को हमेशा फार्मल ड्रेस उपयोग करना चाहिए। चेहरा हमेशा खिलता होना चाहिए। व्यक्तित्व में आकर्षण भी आवश्यक है। (because first impression is the last impression).

2. विद्यार्थियों के साथ बात करने का लहजा :- विद्यार्थियों के साथ बात करने का लहजा सकारात्मक एवं खिली हुई मनमोहक मुस्कान होनी चाहिए। जिससे छात्रों पर सकारात्मक प्रभाव पड़े।

3. छात्रों को कभी-भी अपमानित नहीं करनी चाहिए :- छात्रों के बिच एक छात्र को अपमानित करने से अक्सर छात्र उस शिक्षक को नफरत के नजर से देखता है। जिसके परिणामस्वरूप शिक्षक उस छात्र का मनोबल हरण करता है। वह छात्र उस विषय से भी नफरत करने लगता है जिसे वह शिक्षक उसे पढ़ाता है।

4. छात्रों को प्रेरित करते रहना चाहिए :- शिक्षक को अक्सर ही "you can do it", "Try it", "you can do", "once try it". जैसे शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। इससे छात्रों के अंदर कभी नाकारात्मक सोच नहीं उभरती।

5. शैक्षिक योग्यता :- एक अध्यापक में अध्ययन के लिए स्तर-अनुसार न्यूनतम शैक्षिक योग्यता का होना अनिवार्य है। साथ ही अध्यापक का प्रशिक्षित होना भी आवश्यक है।

6. शिक्षण विधियों का प्रयोग :- एक अच्छा शिक्षक में यह गुण भी होना आवश्यक है कि छात्र उसकी बात को अच्छी तरह समझ सके इसके लिए उसे छात्रों की स्तर अनुसार एवं विषय की प्रकृति अनुसार उचित शिक्षण विधि का प्रयोग करना चाहिए।
जैसे :- छोटे बालकों को खेल-विधि तथा प्रदर्शन विधि

7. एक आदर्श शिक्षक एक अच्छा दोस्त भी होता है :- शिक्षक को हमेशा ऐसा होना चाहिए कि छात्र हमेशा अपनी समस्याओं एवं अपनी मन की बातें करने में न झिझके।

8. होमवर्क देते समय बरती गई सावधानियाँ :- प्रत्येक छात्र को उसकी क्षमता के आकलन के हिसाब से ही होमवर्क पुरा करने को कहना चाहिए। अक्सर अनेक शिक्षक अपने छात्रों को ज्यादा-से-ज्यादा होमवर्क देदेते हैं। जिससे विद्यार्थी समय पर पुरा करने में असमर्थ होते हैं और खुद को तनावग्रस्त महसूस करते हैं।

⇒ भारतीय परिदृश्य में शिक्षक की अस्मिता में आए बदलावों की समझ :

'अथवा'

गुरू से प्रोफेशनल तक का विकास :-

भारतीय संस्कृति का एक सूत्र वाक्य प्रचलित है "तमसो मॉ ज्योतिर्गमय" इसका अर्थ है अंधेरे से उजाले की ओर जाना। इस प्रक्रिया को वास्तविक अर्थों में पूरा करने के लिए शिक्षा, शिक्षक और समाज तीनों की बड़ी भूमिका होता है। भारतीय समाज में जहाँ शिक्षा को शरीर, मन और आत्मा के विकास का साधन माना गया है। वही शिक्षक को समाज के समग्र व्यक्तित्व के विकास का उत्तरदायित्व सौंपा गया है।

महर्षि अरविन्द का मानना था कि किसी राष्ट्र के वास्तविक निर्माता उस देश के शिक्षक होते है। इस प्रकार एक विकसित, सम्पन्न एवं हर्षित राष्ट्र व विश्व के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका ही सबसे महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा का केन्द्रिय घटक विद्यार्थी होता है। और उन्हे सही दिशा निर्देशन करने वाला प्रमुख घटक शिक्षक होता है। शिक्षा के अनेक उद्देश्यों की पूर्ति शिक्षकों के माध्यम से ही होती है। वास्तव में किसी समाज की अभिलाषा, आकांक्षा, आवश्यकता, अपेक्षा और आदर्शों को सफल बनाने का कार्य शिक्षक ही कर सकते है।

भारतीय समाज में शिक्षक सदैव पूजनीय रहे है। क्योंकि उन्हे 'गुरू' कहा जाता है। गुरू के आश्रम में राजकुमारो

को सामान्य वस्त्र ग्रहण करने थे। और उन्हे राजसी ठाठ से दूर रहना था। राजा गुरु के आश्रम में अपना मुकुट निकालकर खाली पैर जाता था और गुरु की सलाह आदेश स्वरूप सर्वोपरि होते थे। विद्यार्थियों को सज्जनता, मानवता, ईमानदारी, परोपकार, सदाचार आदि का विशेष शिक्षा दी जाती थी। इस काल की सबसे बड़ी विफलता यह थी कि शिक्षा सबके लिए नहीं थीं। शिक्षा सिर्फ राजकुमारो एवं समान्ती वर्ग (जमींदार, अमीर) के लोगों तक ही सीमित थीं।

वर्तमान काल में गुरु शिक्षक से प्रोफेशनल हो गए। शिक्षण कार्य पेशा हो गया। शिक्षा में बहुत सारे परिवर्तन आ गए। शिक्षा सबके लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य हो गया। अनगिनत विषयों एवं उपविषयों की शिक्षा दी जाने लगी। शैक्षिक तकनीक एवं computer ने शिक्षा को यंत्रवत् बनाने का कार्य किया। शिक्षक अब सुगमकर्ता या सहायक के रूप में आ गया।

गुरु-शिष्य के संबंध में काफी बदलाव हो गया। चरण-स्पर्श की जगह good morning एवं Bye-Bye आ गए। वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाओं के स्वरूप में आ रहे परिवर्तनों से शिक्षक भी अछूते नहीं रहें। यह सोचनीय विषय बनता जा रहा है कि आज के समय में शिक्षा का अर्थ मात्र पुस्तकीय ज्ञान और विश्वविद्यालयों अथवा संस्थान में अच्छे अंक लाकर एक अच्छी सी नौकरी मिल जाना ही रह गया है। इससे संदेह नहीं है कि शिक्षक

भी आम आदमी है। अतः सामान्य व्यक्ति की जो विशेषताए है वही शिक्षक के व्यक्तित्व में भी दृष्टिगोचर होती है। परन्तु कुछ ऐसी विशेषताए है जो शिक्षक को सामान्य जन से अलग करती है। भारतीय समाज के शिक्षको में संवेदनशील, परोपकारी वृति, ममतामयी, सीधे-सच्चे, प्रतिष्ठित, सहानुभूति, संघर्षशीलता, मार्गदर्शकता आदि के गुण होते है। इनकी सहायता से वह समाज में मान-सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। लेकिन विश्लेषणों से स्पष्ट होता है कि आज के परिवेश में समाज, सरकार, और शिक्षा में ठीक प्रकार से सामंजस्य न होने के कारण शिक्षको की सामाजिक प्रतिष्ठा में भारी गिरावट आ गई है।

कभी-कभी आभास होता है कि शिक्षा की निरन्तर बदल रही व्यवसायिक नीतियो के कारण भारतीय समाज में शिक्षक अन्याय एवं अत्याचार के शिकार हो रहे है। आज शिक्षक स्वयं को सामाजिक शोषण, दबाव, भय आदि से घिरा हुआ महसूस करते है।